

शाकम्भरी चालीसा

दोहा 1

बन्दउ माँ शाकम्भरी चरणगुरु का धरकर ध्यान।
शाकम्भरी माँ चालीसा का करे प्रख्यान॥

दोहा 2

आनन्दमयी जगदम्बिका अनन्त रूप भण्डार।
माँ शाकम्भरी की कृपा बनी रहे हर बार॥

चौपाई 1

शाकम्भरी माँ अति सुखकारी।
पूर्ण ब्रह्म सदा दुःख हारी॥

चौपाई 2

कारण करण जगत की दाता।
आनन्द चेतन विश्व विधाता॥

चौपाई 3

अमर जोत है मात तुम्हारी।
तुम ही सदा भगतन हितकारी॥

चौपाई 4

महिमा अमित अथाह अर्पणा।
ब्रह्म हरि हर मात अर्पणा॥

चौपाई 5

ज्ञान राशि हो दीन दयाली।
शरणागत घर भरती खुशहाली॥

चौपाई 6

नारायणी तुम ब्रह्म प्रकाशी।
जल-थल-नभ हो अविनाशी॥

चौपाई 7

कमल कान्तिमय शान्ति अनूपा।
जोतमन मर्यादा जोत स्वरूपा॥

चौपाई 8

जब-जब भक्तों ने है ध्याई।
जोत अपनी प्रकट हो आई॥

चौपाई 9

प्यारी बहन के संग विराजे।
मात शताक्षी संग ही साजे॥

चौपाई 10

भीम भयंकर रूप कराली।
तीसरी बहन की जोत निराली॥

चौपाई 11

चौथी बहिन भ्रामरी तेरी।
अद्भुत चंचल चित्त चितेरी॥

चौपाई 12

सम्मुख भैरव वीर खड़ा है।
दानव दल से खूब लड़ा है॥

चौपाई 13

शिव शंकर प्रभु भोले भण्डारी।
सदा शाकम्भरी माँ का चेरा॥

चौपाई 14

हाथ ध्वजा हनुमान विराजे।
युद्ध भूमि में माँ संग साजे॥

चौपाई 15

कालरात्रि धारे कराली।
बहिन मात की अति विकराली॥

चौपाई 16

दश विद्या नव दुर्गा आदि।
ध्याते तुम्हें परमार्थ वादि॥

चौपाई 17

अष्ट सिद्धि गणपति जी दाता।
बाल रूप शरणागत माता॥

चौपाई 18

माँ भण्डारे के रखवारी।
प्रथम पूजने के अधिकारी॥

चौपाई 19

जग की एक भ्रमण की कारण।
शिव शक्ति हो दुष्ट विदारण॥

चौपाई 20

भूरा देव लौकड़ा दूजा।
जिसकी होती पहली पूजा॥

चौपाई 21

बली बजरंगी तेरा चेरा।
चले संग यश गाता तेरा॥

चौपाई 22

पाँच कोस की खोल तुम्हारी।
तेरी लीला अति विस्तारी॥

चौपाई 23

रक्त दन्तिका तुम्हीं बनी हो।
रक्त पान कर असुर हनी हो॥

चौपाई 24

रक्त बीज का नाश किया था।
छिन्न मस्तिका रूप लिया था॥

चौपाई 25

सिद्ध योगिनी सहस्रा राजे।
सात कुण्ड में आप विराजे॥

चौपाई 26

रूप मराल का तुमने धारा।
भोजन दे दे जन जन तारा॥

चौपाई 27

शोक पात से मुनि जन तारे।
शोक पात जन दुःख निवारे॥

चौपाई 28

भद्र काली कम्पलेश्वर आई।
कान्त शिवा भगतन सुखदाई॥

चौपाई 29

भोग भण्डारा हलवा पूरी।
ध्वजा नारियल तिलक सिंदूरी॥

चौपाई 30

लाल चुनरी लगती प्यारी।
ये ही भेंट ले दुख निवारी॥

चौपाई 31

अंधे को तुम नयन दिखाती।
कोढ़ी काया सफल बनाती॥

चौपाई 32

बाँझन के घर बाल खिलाती।
निर्धन को धन खूब दिलाती॥

चौपाई 33

सुख दे दे भगत को तारे।
साधु सज्जन काज संवारे॥

चौपाई 34

भूमण्डल से जोत प्रकाशी।
शाकम्भरी माँ दुःख की नाशी॥

चौपाई 35

मधुर मधुर मुस्कान तुम्हारी।
जन्म जन्म पहचान हमारी॥

चौपाई 36

चरण कमल तेरे बलिहारी।
जै जै जै जग जननी तुम्हारी॥

चौपाई 37

कान्ता चालीसा अति सुखकारी।
संकट दुःख दुविधा सब टारी॥

चौपाई 38

जो कोई जन चालीसा गावे।
मात कृपा अति सुख पावे॥

चौपाई 39

कान्ता प्रसाद जगाधरी वासी।
भाव शाकम्भरी तत्व प्रकाशी॥

चौपाई 40

बार बार कहें कर जोरी।
विनती सुन शाकम्भरी मोरी॥

चौपाई 41

मैं सेवक हूँ दास तुम्हारा।
जननी करना भव निस्तारा॥

चौपाई 42

यह सौ बार पाठ करे कोई।
मातु कृपा अधिकारी सोई॥

चौपाई 43

संकट कष्ट को मात निवारे।
शोक मोह शत्रुन संहारे॥

चौपाई 44

निर्धन धन सुख सम्पत्ति पावे।
श्रद्धा भक्ति से चालीसा गावे॥

चौपाई 45

नौ रात्रों तक दीप जगावे।
सपरिवार मगन हो गावे॥

चौपाई 46

प्रेम से पाठ करे मन लाई।
कान्त शाकम्भरी अति सुखदाई॥

समापन दोहा 1

दुर्गासुर संहारणि, करणि जग के काज।
शाकम्भरी जननि शिवे, रखना मेरी लाज॥

समापन दोहा 2

युग युग तक व्रत तेरा, करे भक्त उद्धार।
वो ही तेरा लाड़ला, आवे तेरे द्वार॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/shakambhari-chalisa/